OM - 19- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 12/10/2021 11:46 AM Page 11

सरिता की तरह बहते रहो

जीवन जीने का तरीका हम प्रकृति से सीख सकते हैं। प्रकृति में जितने भी तत्व हैं सभी अपने आप में एक निःस्वार्थ और अति समीप का प्रेम दर्शाते हैं। ट्रस्टीपन की भावना भी प्रकृति के हर तत्व के अन्दर है। कहते हैं नदी न स्वयं अपना जल पीती, न ही पेड़ अपना फल स्वयं खाता। आप कल्पना करो कि आपके सामने नदी प्रकट हो जाये और आपसे कहे कि आप कल से मेरा पानी नहीं पी सकते, टैक्स लगेगा। तो आपकी नदी के प्रति भावना बदल जायेगी। तो ऐसे ही अगर फल कहे कि आप मेरा फल नहीं खा सकते तो आपकी पेड़ के प्रति भी भावना बदल जायेगी। सिद्ध क्या हो रहा है कि जैसे वो लेना शुरु करता है हमसे तो हमारी भावनायें उसके प्रति बदलनी शुरु हो जाती हैं। ये सभी मनुष्यात्माओं पर लागू होती हैं। हम किसी को तब तक सहन करते हैं, उसके लिए लड़ते रहते हैं जब तक वो हमें कुछ न कुछ देता रहता है। लेकिन जैसे ही वो हमसे कुछ मांगना शुरु करता है बस हमारी भावनायें बदल जाती हैं।

मनुष्य का जीवन भी आज कुछ इसी तरह का है। मनुष्य आज हरपल अगर किसी को कुछ देता है तो लेने की भी इच्छा रखता है। ये लेन-देन का व्यापार ही हम सबको नीचे गिराता है। आप इसके अन्दर का साइंस देखिए कि जब हम किसी की सेवा करने के निमित्त बनते हैं और उस सेवा के बदले में मुझे कुछ चाहिए तो सेवा में वो भावना सिर्फ और सिर्फ तब तक है जब तक आपको सेवा के बदले में पैसा चाहिए। इसलिए आज लोग नौकरी में सिर्फ डयूटी करते हैं। मतलब अगर मुझे 10 बजे से 5 बजे तक काम करना है तो बस करना है। इसके अलावा एक्स्ट्रा मुझे किसी ने काम बता दिया तो मुझे नर्वसनेस शुरु हो जायेगी और कल से कहेंगे कि मैं नहीं करूंगा मेरी सेलरी बढ़ा दी जाये। इसीलिए आज किसी की उन्नति नहीं हो रही, सबकुछ डर से हो रहा है प्यार से नहीं हो रहा है।

समाज का हरेक वर्ग कहता है आज हम सोशल वर्कर हैं। सोशल वर्क करने वाला अगर टेंशन में है तो इसका मतलब उसको कुछ न कुछ चाहिए। क्योंकि सोशल वर्क तो एक सेवा है। उसमें आपको टेंशन आना ही नहीं चाहिए। लेकिन आ रहा है। इस दुनिया में इतने सारी सामाजिक संस्थायें चल रही हैं लेकिन उसके अन्दर विकृति क्यों आ गई,क्योंकि उसके अन्दर निःस्वार्थ भावना नहीं रही। आप एक तरफ बात करते हैं कि परमात्मा की कृपा हमारे ऊपर है, दूसरी तरफ मांगने की बात कर रहे हैं। ये दोनों बातें थोड़ा-सा न्याय नहीं कर रही हैं हमारे जीवन से।

आप देखिए, प्रकृति सेवा करती है और हमसे कुछ नहीं लेती है सिर्फ देती है। और हमें उसको प्रोटेक्ट करने का मन करता है। आज कहते हैं ना जल बचाओ, बिजली बचाओ, पेड़ बचाओ क्योंकि वो हमसे नहीं कह रहा है बचाने के लिए। सिर्फ वो दे रहा है। लेकिन आज हमें कोई प्रोटेक्ट नहीं कर रहा है क्यों!? शायद उत्तर हमारे पास है लेकिन अगर उसे हम स्वीकार करें तब ना! सब अपने आपको बुद्धिजीवी कहते हैं, पढ़ा-लिखा कहते हैं लेकिन अगर कहीं समर्पित रूप से सेवा भी कर रहे हैं तो भी असंतुष्ट हैं। आप सोचिए कौन से वायब्रेशन हम अपनी सेवा में फैला रहे हैं। कौन हमसे अच्छा फील करेगा। सबको अन्दर की वृत्ति, अन्दर की भावना पता चलती है। सब समझते हैं कि ये कुछ न कुछ हमसे चाहते हैं। इसीलिए हम सिर्फ सेवा करें कि न कि बतायें कि हमारा ये प्रोजेक्ट चल रहा है कि चाहें तो आप इसमें सहयोग दे सकते हैं। ये क्या है? पहले से ही अगर हम इस भावना से सेवा करेंगे तो सेवा का बल जमा नहीं होगा। इसीलिए हम सभी प्रकृति के पांचों तत्वों से बने हुए शरीर को आज नैचुरल चिकित्सा पद्धति से ठीक करने की कोशिश कर रहे हैं। इतना ज़्यादा लोभ वृत्ति हमारे अन्दर बढ़ी है कि हमारी आंखों के आगे एक पर्दा-सा पड़ गया है। घर बनना ज़रूरी है चाहे पेड़ कितने भी कट जायें। आज की मनुष्य की विकृति उसे कितना गर्त में ले गयी है ये आज हर मनुष्य की मानसिकता को देखकर जान सकते हैं।

क्यों हमने इस लेख की शुरुआत प्रकृति से की, क्योंकि अगर सीखना है तो सिर्फ प्रकृति से। क्योंकि इस समय कोई भी संसार में ऐसा नहीं है जो देता भी हो लेकिन उसके बदले कुछ लेता न हो। प्रकृति से हमको एक बात और सीखनी है कि इस दुनिया में जो भी चीज़ हमें मिली है वो सिर्फ और सिर्फ यूज़ करने के लिए है और छोड़ देना है। लेकिन आज हमें कोई भी चीज़ अगर मिल जाती है तो उसे प्रयोग भी करते हैं और उसे दबाके भी रखते हैं। लेकिन ज़मीन तो प्रकृति की है ना! लेकिन उसपर हमने कब्जा किया हुआ है इसीलिए डर लग रहा है। कोई हमसे ले न ले। कुछ भी हमारा यहाँ नहीं है।

सार ये है कि जिस तरह से सरिता बहती रहती है तो जल बहुत स्वच्छ दिखता है और अगर वो कहीं इकट्ठा हो जाता है तो उसका जल कोई नहीं पीता। तो तभी आपको सभी प्यार करेंगे, सब सम्मान देंगे सभी आपसे शुभ विचारों से मिलेंगे जब आप एक निरन्तर सरिता की तरह बहते रहेंगे। तो जीवन बहने का नाम है, चलने का नाम है, कहावत ही नहीं बनके रह जाना है। कुछ करके दिखाना है, बहते जाना है।

वैर-भरतपुर(राज.)। भजनलाल जाटव को कैबिनेट मंत्री बनने पर बधाई एवं ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. गीता बहन एवं ब्र.कु. संस्कृति बहन।

इंदौर-म.प्र.। भारतीय मीडिया संस्थान नई दिल्ली के महानिदेशक डॉ. संजय द्विवेदी के इंदौर आगमन पर ज्ञान शिखर,ओमशांति भवन में आर्ट गैलरी का अवलोकन करने के पश्चात् ज्ञान चर्चा कर ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. हेमलता दीदी। साथ हैं स्वदेश समाचार के प्रबंधक विवेक गोरे, वरिष्ठ साहित्यकार मुकेश तिवारी, ब्र.कु. अनीता तथा ब्र.कु. उषा।

सोनकच्छ-म.प्र.। सेवाकेन्द्र के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. प्रेमलता बहन, टी.आई. नीता डेरवाल, नायब तहसीलदार अभिषेक चौरसिया, ब्र.कु. सोनाली तथा अन्य बहनें।

भरतपुर-राज.। सुरक्षा सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में ब्रजेश चौधरी,कमांडेंट,पुलिस ट्रेनिंग स्कूल बांसी भरतपुर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अस्मिता बहन, ब्र.कु. प्रवीणा बहन तथा ब्र.कु. मीनाक्षी बहन।

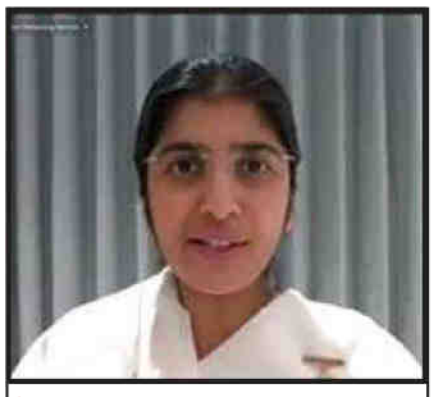

मैसूर-कर्नाटक। कनफेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री मैसूर द्वारा 'कॉर्पोरेट वेलनेस-द की टू ए प्रोडक्टिव वर्कप्लेस' विषय पर आयोजित ऑनलाइन कॉन्फ्रेन्स में ब्रह्माकुमारीज़ की राजयोग शिक्षिका एवं जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी बहन ने सम्बोधित किया। इस मौके पर डॉ. एच.आर. नागेन्द्र,चांसलर,स्वामी विवेकानंद योग अनुसंधान संस्थान युनिवर्सिटी, डॉ. हेमंत कामत,फाउण्डर,महालक्ष्मी परिपूर्ण जीवन प्रतिष्ठान,कारवार, डॉ. वीणा जी. राव,प्रोफेसर एंड एच.ओ.डी.,डिपार्टमेंट ऑफ पंचकर्मा,जे.एस.एस. आयुर्वेदा मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल,मैसूर, पवन रंगा,चेयरमैन,सी.आई.आई. मैसूर एंड मैनेजिंग डायरेक्टर,रैंगसंस तथा सुप्रिया सालियान,वाइस चेयरपर्सन,सी.आई.आई. मैसूर एंड मैनेजिंग डायरेक्टर,प्लैन्सी इंडिया एच.पी.एम. प्रा.लि. ने भी अपने विचार रखे एवं अपनी शुभकामनायें दीं।

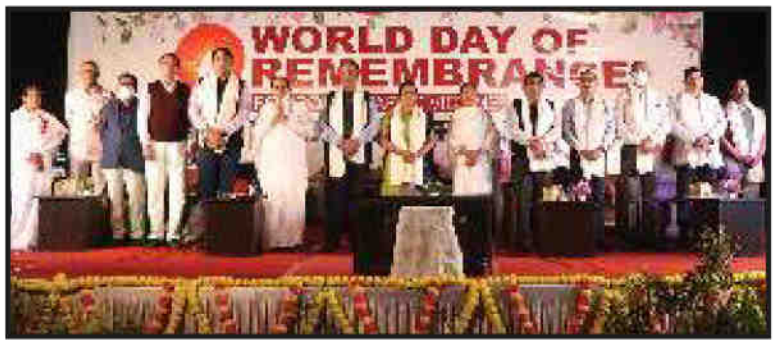

जमशेदपुर-झारखण्ड। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा विश्व यादगार दिवस पर सड़क दुर्घटना पीड़ितों की स्मृति में बिष्टूपुर स्थित गोपाल मैदान में आयोजित श्रद्धांजलि कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अंजू बहन ने सम्बोधित करने के साथ सभी को वाहन चलाते समय नशे का सेवन न करने का संकल्प कराया। इस अवसर पर नीरज सिन्हा,चीफ,सेफ्टी,टाटा स्टील, डॉ. विनीता पाणीग्राही,सीनियर कन्सलटेंट एंड एचओडी,इमरजेंसी सर्विसेज,टीएमएच, जे.जे. राम,इंस्ट्रक्टर,ईएलटीसी,टाटा नगर,साउथ इस्टर्न रेलवेज़, प्रबीना कुमार सेनापति,चीफ इंस्ट्रक्टर,ईएलटीसी,टाटा नगर,साउथ इस्टर्न रेलवेज़, डॉ. मनोज कुमार राजन,हेड कन्सलटेंट एंड एचओडी,ऑर्थोपेडिक्स, अशोक कुमार भालोटिया,चेयरमैन,भालोटिया ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज़, अशोक कुमार मोदी,प्रेसीडेंट,पूर्वी सिंघभूम मारवाड़ी सम्मेलन, डॉ. ए.के. लाल सहित अन्य गणमान्य लोगों ने भी दुर्घटनाओं के कारण और सुरक्षित यात्रा के लिए लोगों को सजग किया। मौके पर ब्र.कु. रागिनी बहन, ब्र.कु. जया बहन व ब्र.कु. राजवंती बहन आदि मौजूद रहे।

पटिआ-भुवनेश्वर(ओडिशा)। भारतीय मौसम विभाग के महानिदेशक,आई.एम.डी. डॉ. टू मृत्युंजय महापात्र, भुवनेश्वर मौसम विज्ञान विभाग के प्रमुख डॉ. एच.आर. विश्वास तथा ओडिशा प्रशासन अधिकारी रश्मी रेखा पात्रा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गुलाब बहन एवं ब्र.कु. दीप्ति।

अम्बिकापुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा होली क्रॉस कॉलेज में 'हाउ टू ओवरकम फीयर ऑफ ऐन एग्ज़ामिनेशन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. पूजा बहन।